Anusandhan Vatika

स्वामी परमंहस योगानन्द जी का जीवनवृन्त, शैक्षिक चिन्तन तथा क्रिया–योग

शोधकर्ती:
निक्की त्यागी
शिक्षा विभाग स्कूल ऑफ सोशल साइंसिज आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

निर्देशिका:
डॉ0 राजकुमारी सिंह
डीन एवं डारेक्टर
शिक्षा विभाग
स्कूल ऑफ सोशल साइंसिज आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश

स्वामी परमहंस योगानन्द जी का जन्म 5 जनवरी 1893 को गोरखपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। परमहंस योगानन्द 20वी सदी के एक आध्यात्मिक गुरू, योगी व संत थे उन्होंने अपने अनुयायियों को क्रिया योग का उपदेश दिया उन्होंने पूरे विश्व में भ्रमण करके उसका प्रचार प्रसार किया। उनकी आध्यात्मिक कृति योगी कथामृत {An Autography of a Yogi 1946} है। स्वामी परमहंस योगानन्द दार्शनिक आध्यात्मवाद पक्षधर थे। इन्होंने मानव जीवन से सम्बन्धीत सभी क्षेत्रों में कार्य किया। इन्होंने शिक्षा व योग क्रिया के द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित किया है।

की–वर्डः– क्रिया योग, शैक्षिक चिन्तन, आध्यात्मिक दर्शन

जीवन परिचयः–

परमहंस योगानन्द जी का जन्म 5 जनवरी 1893 को गोरखपुर उत्तर प्रदेश में हुआ। इनका असली नाम मुकुन्दलाल घोष था। इनके पिता का नाम भगवतली चरण घोष था, जो बंगाल नागपुर रेलवे में उपाध्यक्ष के समकक्ष पद पर कार्यरत थे। योगानन्द जी अपने माता–पिता की चौथी सन्तान थे। उनके माता–पिता महान क्रया योगी लाहिड़ी महाशय के शिष्य थे। 10 साल तक योगानन्द जी अपने गुरू के आश्रम में अपने उच्च शुल्क के लिए शिक्षित हुए और उसी समय अपने विश्वविद्यालय के बाद वह भगवान की दृष्टि के प्रकाश से भर गए। वह अब अपने गुरूओं द्वारा सौपो हुआ मिशन पूरा करने के लिए तैयार थे। युवाओं की शिक्षा हमेशा योगानन्द जी के दिल को प्रिय थी। उन्होंनें 1917 में बंगाल अपने पहले स्कूल की स्थापना की औश्र उच्च विद्यालय के पाठ्यक्रम में उन्होंने युवाओं के शारीरिक विकास के लिए एकाग्रता, ध्यान व योग प्रणाली आदि विषय शामिल किए। 1920 में योगानन्द जी भारत से बोस्टन में अंतराष्ट्रीय कांग्रेस के एक प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका चले गए और तब से अमेरिका उनका घर बन गया। 5 साल बाद वह माउंट वाशिंगटन, लॉस एंजिल्स में आत्मानुभूति अपने मुख्यालय के साथ फैलोशिप की स्थापना की। अपनी प्रसिद्ध आत्म–कथा ''योगी–कथामृत'' में योगानन्द जी ने भारत के महान योगी के साथ अपने आध्यात्मिक अनुभवों तथा संपर्क का विवरण दिया है तब से यह पुस्तक दुनिया की सबसे बड़ी आध्यात्मिक पुस्तक बन गयी और इस पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया।

''परमहंस योगानन्द जी का एक बड़ा व दान–शील दिल था। हालांकि वह खुद एक महान मास्टर थे पर वह बड़ी श्रद्धा के साथ अन्य संतो से संपर्क किया करते थे। क्रिया–योग भगवान प्राप्ति की विधि है, जो योगानन्द जी द्वारा पढ़ाया जाता था। पश्चिम में अपने मिशन के लिए प्रवेश योग प्रथाओं, जिसके द्वारा आदमी भगवान के साथ संथ में ज्ञान का प्रसात करने के लिए प्रवेश कर सकते हैं, योगानन्द जी ने बाइबिल की शिक्षाओं का एक नए ढंग से स्पष्टीकरण किया। योगानन्द जी ने हिन्दी धर्म के साथ अपनी शिक्षाओं की समानता को दर्शाया। उन्होंने पूर्व और पश्चिम के बीच एक बेहतर समझ के कारण को बढ़ावा दिया। कई छात्रों को योगानन्द जी द्वारा आयोजित कक्षाओं में उनकी बत्तीस साल की योग की शिक्षाओं में व्यक्तिगत निर्देश मिले। सन् 1935 में योगानन्द जी ने अपने पुस्तक को वर्ग के रूप में प्रकाशित किया तथा उसे दुनिया भर के सभी छात्रों के लिए भेज दिया। उन्होंने भारत में वैसी ही शिक्षाओं को योग सत्संग सोसायटी द्वारा दसिणेश्वर में अपने मुख्यालय के साथ फैलाया। योग और संतुलित रहने पर निर्देश देने के अलावा कई सामाजिक सेवाओं को भारत में विशेष रूप से आयोजित किया।

परमहंस योगानन्द जी एक आध्यात्मिक गुरू योगी और संत थे। उन्होंने अपने अनुयायिओं को क्रिया योग ईश्वर से साक्षातकार की एक प्रभावी विधि है। जिसके पालन से अपने जीवन को सवारा जा सकता है और ईश्वर की ओर अग्रसर किया जा सकता है। योगानन्द जी प्रथम भारतीय गुरू थे जिन्होंनें अपने जीवन के कार्य को पश्चिम में किया। योगानन्द जी ने 1920 में अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। सम्पूर्ण अमेरिका में उन्होंनें अनेक यात्रायें की। योगानन्द जी ने अपना जीवन व्याख्यान देने, लेखन तथा निरंतर विश्व व्यापी कार्य को दिशा देने में लगाया। परमहंस योगानन्द जी पश्चिम के गुरू माने जाते है।''

"परमहंस योगानन्द जी विश्वविश्रुत योगधारा के उन्नायक थे। बचपन से ही स्वामी योगानन्द जी का अध्यात्म तथा सन्यास की ओर आकर्षण था। 20 वी सदी के प्रारंभ में, बंगाल में स्वामी योगानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। एक से दूसरे गुरू तक होते हुए उनकी जीवन यात्रा अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित रियलाइजेशन, फैलोशिप सेंटर में समाप्त हुई। उनकी पुस्तक "योगी **कथामृत**" आध्यात्म तथा विज्ञान की गुत्थियों को खेलती एक कुंजी है। गाँधी जी ने स्वयं क्रिया योग की सम्पूर्ण विधि सीखी थी। परमहंस योगानन्द जी आधुनिक समय के बहुत ही प्रतिष्ठित आध्यात्मिक नेताओं में से एक माने जाते हैं।"

शैक्षिक चिन्तनः–

"श्री युक्तेश्वर ने मुकन्द को स्वमी की उपाधि दी (मुकन्द को स्वामी योगानन्द का नाम दिया) तो शिष्य ने भगवान द्वारा उन्हे दिया गया कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने दिहिका नाम के स्थान पर एक विद्यालय की स्थापना की। शिक्षा में उनकी सदा से रूचि थी जैसे एक कहावत है "जैसे छोटी डाली बढती है वैसे ही वृक्ष पनपता है।" यदि समाज का उत्थान करना है तो उपयुक्त समाज बचपन है क्योंकि यही वह समाज है जब बुद्धि सबसे अधिक परिवर्तनशील होती है उनका कहना था कि बचपन से ही एक उचित शिक्षा का अति महत्तव है। योगानन्द जी की पद्धति, विद्यार्थी से आरंभ होती थी, न कि उस ज्ञान से जो मस्तिष्क में डालना होता है। बच्चों को आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है। आकर्षक बनाए जाने चाहिए, बच्चो को यह दिखाकर कि इन मूल्यों के पालन से ही वह प्रसन्नता मिलती है जिसे सब व्यक्ति ढूढ़ रहे हैं। ज्ञान की महत्तवता की उपेक्षा न करते हुए योगानन्द जी विद्यार्थियों के अपनी क्षमताओं को विकसित करने पर ध्यान देते थे।"

"उनके विद्यालय की स्थापना पहले दिहिका में हुयी थी। फिर कुछ वर्षो के पश्चात मुकन्द को बिहार राज्य के राँची नगर को बाहर अपना महल दे दिया। योगानन्द जी दिहिका से अपने विद्यार्थी यहाँ ले आए और यहाँ उनका विद्यालय में क्षमता से कही अधिक विद्यार्थी भर्ती होने लगे। योगानन्द जी अपने विद्यालय को ब्रह्मचर्य विद्यालय कहते थे। उनके अनुसार विद्यालय का अर्थ है– पाठशाला, जहाँ बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ बालक नैतिक मूल्यों को ग्रहण करता है। योगानन्द जी प्राचीन मूल्यों को वर्तमान की वास्तविकता में परिवर्तित कर लाना चाहते थे यह उन्होंनें विद्यार्थियों के बालपन से ही प्रारंभ कर दिया। योगानन्द जी ने मूल सदगुणों पर अधिक महत्तव दिया और कहा कि यह मानवीय परिपूर्णता के लिए बहुत आवश्यक है।"

"योगानन्द जी के अनुसार प्रसन्नता और सम्पूर्णता मन के दृष्टिकोण हैं। यह ऐसी अमूर्त बातो पर निर्भर करती है जैसे, उत्साहपूर्ण रहना, समस्याओं पर सोचने की अपेक्षा उनके समाधान पर ध्यान देना और स्वंय में शान्त रहना। उनके अनुसार यह सत्य है कि सभी क्षेत्रों में सफलता के लिये उसके अनुरूप आँकड़ो का ज्ञान होना आवश्यक है किसी भी विषय जिसमें आप पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं उसके साथ मानसिक रूप से एकाकार होना आवश्यक है। परमहंस योगानन्द जी Education for Life की प्रणाली में विश्वास करते थे। Education for Life की प्रणाली एक वास्तविक प्रसन्न और परिपूर्ण जीवन के लिए उचित दृष्टिकोण को अपनाना सिखाती है। Education for Life ज्ञान की महत्तवता को कम नही करती। यह किसी भी क्षेत्र में दक्षता प्राप्त करने के लिए उचित ज्ञान देती है सच्ची सफलता का एक पहलू जो कि आधुनिक शिक्षा में व्यापक तौर पर अनदेखा किया जाता है वह स्वयं मानव जिसे उच्च शिक्षा का प्रयोग करना पड़ेगा। यदि किसी व्यक्ति ने गहन ध्यान के साथ कार्य करना नही सीखा तो उसे कितना भी ज्ञान दो वह असफल हो जाता है।

असाधारण सफलता वाले सभी व्यक्ति किसी भी कार्य पर गहन ध्यान देने की क्षमता रखते हैं। Education for Life की क्षमता रखते हैं Education for Life की प्रणाली हमारे वर्तमान युग में सब वास्तविकताओं के साथ सामजस्य है वह मानवीय चेतना के उन भावों को उजागर करती है जो मानव की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करते हैं। पूरे विश्व में योग का प्रचार प्रसार अपनी चरम सीमा पर है। अगर हम बात करें योग क्रिया की तो इसे दुनिया तक पहुँचाने में जिस व्यक्ति का सबसे ज्यादा योगदान है, वह परमहंस योगानन्द जो भारतीय योग के पहले ब्रांड अंबेसडर कहे जाते हैं। परमहंस योगानन्द बचपन से सधुक्कड़ी मिजाज के थे। बचपन में ही ये घर से गुरू खोजने निकल गए 1910 में इनकी मुलाकात स्वामी युक्तेश्वर गिरि जी से हुयी फिर इनकी आध्यात्मिक यात्रा चल निकली। इन्होंनें अपने गुरू से ही योग और मेडिटेशन की ट्रेनिंग ली। योगानन्द जी 1920 में अमेरिका गए। वहां बोस्टन में धार्मिक बुद्धिजीवी की हैसियत से हिस्सा लिया गया तथा तभी वहां सेल्फ रियलाइजेशन, फेलोशिप के नाम से एक संस्था शुरू की जिसमें योग तथा ट्रेडिशनल मेडिटेशन की कला को आगे बढ़ाया गया। इंस्टीट्यूट जम जाने के बाद घूम–घूम कर स्पीच देने का काम शुरू किया। इस बीच तमाम (फेमस) प्रसिद्ध लोग उनके शिष्य हो गए।"

"परमहंस योगानन्द पहले साधु थे जिन्होंने भारतीय योग का झंडा यूरोप में ऊँचा किया। 1920 से 1952 तक का लंबा वक्तु उन्होंने अमेरिका में बिताया। वहाँ लोग इन्हे औश्र इनके हुनरों को पलको पर बिटाते थे। 1935 में भारत लोटने पर इन्होंनें अपने इंस्टीट्यूट और गुरू के काम को आगे बढ़ाया। महात्मा गाँधी से मिले तथा गाँधी जी ने उनके संदेशो को लोगो तक पहुँचाया यही वक्त था जब उनके गुरू ने उनको परमहंस की उपाधि दी। एक साल तक यहां अलख जगाने के बाद ये अमेरिका वापस लौट गए। आगे चार साल तक यहां रहे। इसी दौरान इन्होंने किताब लिखि An Autobiography of a Yogi."

परमहंस योगानन्द का क्रिया योगः–

"परमहंस योगानन्द एक महान क्रिया–योगी थे। इनके अनुसार जीवन का लक्ष्य है सुख, शांति, प्रेम और ज्ञान प्राप्ति। ईश्वर समस्त मानवता के माध्यम से ही स्वंय को अभिव्यक्त करता है पूर्णतया की कामना जीवात्मा में उसी में अवस्थित ईश्वर के

प्रतिरूप से आती है। योगानन्द जी का क्रिया–योग ईश्वर–बोध, यथार्थ–ज्ञान एवं आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने की एक वैज्ञानिक प्रणाली है प्राचीन सिद्व परम्परा के 18 सिद्वो की शिक्षा का संश्लेषण कर भारत के एक महान विभूति, बाबाजी नागराज ने इस प्रणाली को पुनर्जीवित किया। इसमें योग के विभिन्न क्रियाओं को 5 भागों में बाँटा गया है। परमहंस योगानन्द के अनुसार क्रिया कुण्डलिनी प्रणाली के अभ्यास को ईश्वरीय चेतना की ओर मनुष्य की स्वाभाविक प्रगति तीव्रतर हो जाती है।''

''इनकी मृत्यु का किस्सा सबसे दिलचस्प है। ये एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। मेडिटेशन पर इन्होंने बड़ी रिसर्च भी की थी। इसलिए अपनी ममौत का पूर्वाभास भी इन्हें होने लगा था। 7 मार्च 1952 की शाम को अमेरिका में भारत के राजदूत विनय रंज अपनी पत्नी सहित लॉस एंजिल्स के होटल में खाने पर थे, जिसमें उनके साथ योगानन्द जी भी थे। इसके बाद योगानन्द जी का ''दुनिया की एकता पर'' भाषण था। वो अपना भाषण दे रहे थे। अंत में अपनी कविता की चंद लाइने भी कहीं, जिसमें अपने देश भारत की महिमा का वर्णन था। फिर उनकी आँखे आसमान की ओर तथा देह फर्श पर लुड़क गयी।

निष्कर्षः–

''स्वामी परमहंस योगानन्द जी के जीवन वृन्त का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि स्वामी जी युवाओं की शिक्षा के लिये प्रतिबद्ध थे। उनके द्वारा स्थापित उच्च विद्यालय के पाठ्यक्रम में उन्होंने ध्यान, पोया को विशेष स्थान दिया। स्वामी जी आजीवन योग एवं आध्यात्म से परिपूर्ण हैं। स्वामी जी व्यक्ति के मूल सदगुणों पर अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार यह मानवीय परिपूर्णता के लिये बहुत आवश्यक है। योगानन्द जी पहले साधु थे जिन्होंने भारतीय योग का झंडा यूरोप में ऊँचा किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः –

एस0 राधाकृष्ण (1976), ''उपनिषदों की भूमिका'', राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली।
योगानन्द परमहंस (1976), ''योगी कथामृत'', डी0पी0बी0 प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
शर्मा ए0 आर0 (2013), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार'', आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
विवेकानन्द स्वामी (1959), ''शिक्षा संस्कृति व समाज'', प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
विवेकानन्द स्वामी (1972), ''विवेकानन्द साहित्य'', अद्धैत आश्रम मायावती अल्मोड़ा।
विवेकानन्द स्वामी (1987), ''ज्ञान योग'', धन्तोली नागपुर।
विवेकानन्द स्वामी (1992), ''धर्म तत्व, रामकृष्ण आश्रम'',धन्तोली नागपुर।
विवेकानन्द स्वामी (1992), ''वेदान्त रामकृष्ण आश्रम'', धन्तोली नागपुर।
सक्सेना एन0 आर0 स्वरूप (1991), ''शिक्षा सिद्धान्त'', इन्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस मेरठ।